अनुसंधान – १९९५ – ०५
संपादक - विजयशीलचन्द्रसूरि

मुख्य टाइटल

निवेदन

अनुक्रमणिका

धूमावलि प्रकरणं – संपा. आ. विजयसूर्योदयसूरि ---------- १

प्राकृतशब्दा संस्कृते नानार्थाः – संपा. शीलचंद्रविजय गणी ---------- ४

शब्दार्थ चन्द्रिका – (पं. हंसविजय-विरचित) – संपा. मुनि धर्मकीर्तिविजय ----------१२

वे सरस्वती-स्तोत्र – संपा. मुनि रत्नकीर्तिविजय ---------- २४

हीरविजयसूरिनो लेख – संपा. मुनि महाबोधिविजय ---------- ३९

शत्रुंजय-मंडन-ऋषभदेव-स्तुति – संपा. मुनि भुवनचन्द्र ---------- ४०

चोवीस जिन नमस्कार (अष्टमी, माहात्म्य-गर्भ) (वापक यशोविजयजी कृत) – संपा. शीलचन्द्रविजय गणि ---------- ४४

त्रण चउवीसी विहरमाण-जिन-स्तवन (लक्ष्मीसगरसृष्टि-शिष्य-कृत) – संपा. मुनि कल्याणकीर्तिविजय ---------- ४७

उवहाण पइट्ठा पंचासग उपरथी फलित थतो एक मुद्दो – पं. शीलचन्द्रविजय गणि ---------- ५२

उमास्वाति-आर्यसमुद्रनां नवप्राप्त पद्यो विषे – मधुसूदन ढांकी---------- ५४

रिस्टोरेशन ऑफ धी ओरिजिनल लेंग्वेज ऑफ धी अर्धमागधी टेक्स्टस – एक परिचय – के. आर. चन्द्र ---------- ६०

टूंक नोंध ---------- ६३-६७

केटलाक कथाघटको ---------- ६८-८०

प्रयोगनी पगदंडी---------- ८१-८४

नवप्रकाशित साहित्यनो परिचय ---------- ८५

प्रकाशन-माहिती ---------- ८७

अज्ञातकर्तृक अर्हत्प्रवचनसूत्र-सविवरण – सं. शीलचंद्रविजय गणि ---------- ८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org